लौट के आजा हनुमान .....

(तर्ज : लौट के आजा मेरी गीत...)

लौट के आजा हनुमान, तुम्हें भगवान् बुलाते हैं ।
देर न कर हनुमान, तुम्हें श्रीराम बुलाते हैं ।
गए पवनसुत लेन संजीवन अब तक क्यों नहीं आए ।
सेनापति सुग्रीव पुकारे नर–वानर कुम्हलाए ।
सब लोग भए सुन ज्ञान, तुम्हें भगवान् बुलाते हैं । ।।1।।
कभी तड़पते कभी बिलखते भर–भर नैन प्रभु रोते हैं ।
हाय लखन कह–कहकर प्रभु अश्रुधार बहाते हैं ।
प्रभु करते रुदन महान्, तुम्हें भगवान् बुलाते हैं । ।।2।।
बीत गई सब रैन रही और न पल बाकी ।
देख–देख कर राह तुम्हारी, बैरिन अंखियां थाकीं ।
उदय न हो जाए भानु, तुम्हें भगवान् बुलाते हैं । ।।3।।
प्रातः समय हनुमान संजीवन ले सैन्य बीच हैं आए ।
धन्य हो बजरंगी लक्ष्मण के प्राण बचाए ।
अब जाग उठे बलवान, अब खुश हुए भगवान् ।
लौट के आजा हनुमान, तुम्हें भगवान् बुलाते हैं । ।।4।।

माला फेरे हाथ में, मन में है दुर्गन्ध।
चाहे निज कल्याण को वह नर है मति मंद।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान